पूज्य गुरुदेवश्री की जयन्ती के अवसर पर –

गुरुणां गुरु : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई

(नोट : अमेरिका के मुमुक्षु भाइयों द्वारा गठित नवीन संस्था मोना (मुमुक्षु मण्डल ऑफ नोर्थ अमेरिका) द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के १२२वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई द्वारा दिनाँक ७ मई २०११ को दिया जाने वाला व्याख्यान जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है - सह संपादक)

परमपूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का अवतार, इस पंचमकाल का आश्चर्य ही कहा जायेगा। यदि मैं कहूँ, कि इस जीवन में मुझे, यदि उनके दर्शन नहीं होते, तो मेरे मानस पटल पर, संत वृत्ति की परिकल्पना भी आकार न ले सकी होती।

कैसे होते हैं संत ? किसे कहते हैं संत वृत्ति ? यदि किसी को देखना है, समझना है, तो स्वामीजी के व्यक्तित्व में झांककर देखें।

ऊँची कदकाठी, गौर वर्ण, दैदीप्यमान मुखमण्डल, धवल वस्त्र और इस आवरण में विराजमान एक अनावृत खुला हुआ व्यक्तित्व, मात्र एक ग्रन्थि से आवरित, एक निर्ग्रंथ व्यक्तित्व जगत के प्रपंचों से अछूता, मायाचार विहीन, जोड़ तोड़ से परे, प्रबंधन से पृथक, एक बच्चे के समान निश्चल, कोमल, समुद्र के समान गुरुता–गंभीरता ऐसे एक विशाल आयामी व्यक्तित्व के धनी पूज्य गुरुदेवश्री सही मायनों में गुरुणाम् गुरु थे। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति मैंने अनेकों कवितायें लिखीं हैं। एक पद प्रस्तुत है –

वे आये तो, इस जीवन को, एक दिशा दिखला गये।
यूँ लगता था, मानो अब हम सही मार्ग पर आ गये।।
रे अनादि से, विस्मृत आतम को, अब ना भूलेंगे।
अब निश्चय ही, एक दिवस हम, सिद्धशिला छू लेंगे।।

मेरा आज का विषय है – विगत ३० वर्षों में कुन्दकुन्द कहान के तत्त्वज्ञान का प्रचार एवं स्थायित्व, उसमें युवा फैडरेशन का योगदान और आगामी ३० वर्षों की कार्य योजना तथा उसकी चुनौतियाँ।

बात बहुत करनी है और समय बहुत कम है।

यह तो सारी बात पूज्य गुरुदेवश्री के महाप्रयाण के बाद की हुई

पूज्य गुरुदेवश्री के समय से प्रारम्भ किये बिना बात अधूरी ही रहेगी

पूज्य गुरुदेवश्री के पहले तत्त्वज्ञान की चर्चा दुर्लभ ही थी। यदि चर्चा चलती भी तो मात्र पढने–पढाने तक सीमित थी।

कोई इसलिये स्वाध्याय नहीं करता था कि उसे आत्मकल्याण करना है, मोक्ष जाना है; पर पूज्य गुरुदेवश्री ने उपदेश देने के लिये स्वाध्याय नहीं किया। उनका स्वाध्याय आत्मकल्याण के लिये था।

परिवर्तन के बाद भी उनके प्रवचन मात्र स्वान्त:सुखाय ही हुआ करते थे।

वे किसी को समझाने के लिये प्रवचन नहीं करते थे।

मात्र निज भावना के अर्थ ही स्वाध्याय किया करते थे।

जगत में दूसरा ऐसा वक्ता खोज पाना असम्भव है

ऐसा नहीं है कि वे तत्त्वप्रचार नहीं करना चाहते थे। एक सच्चे आत्मार्थी को तत्त्वप्रचार की तीव्र इच्छा न हो – यह तो संभव ही नहीं है, वे तो स्वयं कहा करते थे कि यदि किसी कौवे को भोजन मिल जाये तो पहले वह कांव–कांव करके अपने साथियों को बुलाता है, फिर सबके साथ मिल बांटकर खाता है।

तुझे आत्मकल्याण का यह मार्ग मिला और तू औरों को इस मार्ग पर न लगाये तो तू कौवों से भी गया बीता साबित होगा।

पर वे तो आत्मार्थी थे, प्रचारक नहीं; तत्त्वप्रचार उन्हें बहुत अच्छा लगता था; वे तत्त्वप्रचार में संलग्न लोगों का सम्मान भी करते थे और प्रोत्साहित भी, पर वे कभी प्रचारक नहीं बने।

उनके साथ सब कुछ अद्भुत था – वे प्रचारक नहीं बने पर प्रचार बढता गया। वे कहीं नहीं गये पर लोग उनके पास आते गये, उनसे जुड़ते गये।

पर यह क्या ? यहाँ भी उनका विरोध प्रारंभ हो गया इक तरफा।

उनकी ओर से न तो आक्रमण था और ना ही प्रतिकार, पर विरोध बढता गया, उग्र होता गया; मात्र उनके विरोध के ही नाम पर अनेकों संस्थाएं फलने फूलने लगीं, अखबार चलने लगे, विद्वानों को काम मिल गया।

पूज्य गुरुदेवश्री स्वयं तो आत्मार्थी थे ही; उनके साथ जो लोग जुड़े, वे भी आत्मार्थी बनकर ही जुड़े; अनेकों वर्षों तक यही क्रम चलता रहा।

कालक्रम में वही कुछ स्वाध्यायी लोग अपने–अपने नगर में सामूहिक स्वाध्याय करने लगे और कुछ पर्युषण में प्रवचन के लिये जाने लगे।

ये लोग जो बातें करते थे, वे बातें किसी ने पहले कभी सुनी नहीं थीं, जब यह चर्चा थोड़ी बढने लगी तो जो लोग, धर्म और समाज की रक्षा का भार अपने सिर पर लेकर घूमते थे, वे विचलित होने लगे; उन्हें धर्म ही संकट में दिखाई पड़ने लगा। बस ! फिर क्या था, चारों ओर से विरोध होना प्रारम्भ हो गया और कालान्तर में, इस विरोध ने ऐसा उग्र रूप धारण कर लिया कि स्वाध्याय प्रेमी मुमुक्षु समाज को, जिनमंदिर में, सामूहिक तौर पर स्वाध्याय करना संभव ही नहीं रह गया। बस इसी पृष्ठभूमि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन अस्तित्व में आया।

इससे कई वर्षों पूर्व पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा से, सेठ श्री पूरनचंदजी गोदिका ने जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना की और सन् १९६७ में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इस ट्रस्ट से जुड़े।

तब उन्होंने आधुनिक भाषा शैली में बालकों को तत्त्वज्ञान की शिक्षा देने के लिये एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया। इन पुस्तकों को पढाने के

लिये देशभर में ४५० वीतराग–विज्ञान पाठशालाएं स्थापित कीं।

इन पाठशालाओं के संचालन के लिये वीतराग विज्ञान पाठशाला समिति की स्थापना की; इनकी परीक्षा लेने के लिये वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की स्थापना की; जिसके माध्यम से देशभर में प्रतिवर्ष बीस हजार से अधिक विद्यार्थी धार्मिक परीक्षा देते हैं।

पाठशालाओं में व्यवस्थित, वैज्ञानिक और रोचक तरीके से इन किताबों को पढने के लिये योग्य प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करने के लिये गर्मियों की छुट्टियों में प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला प्रारंभ की; जो ४२ सालों से आज तक चल रही है और जिसमें अब तक बारह हजार से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

पूज्य गुरुदेवश्री ने जिनआगम के जिन मर्मों को उद्घाटित किया; वे बातें अज्ञान के कारण सामान्य जनता की समझ में नहीं आ पाती थी और उनसे भ्रांति पैदा होती थी, जो अंतत: उग्र विरोध का कारण बनती थी।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने उन सभी विषयों को आगम के प्रमाण देकर सरल, रुचिपूर्ण और आधुनिक भाषा शैली में लिखकर प्रस्तुत किया। जो धर्म के दशलक्षण, क्रमबद्धपर्याय, जिनवरस्य नयचक्रम्, अनेकान्त एवं स्याद्वाद, निमित्त–उपादान आदि किताबों के रूप में हमारे सामने आयी।

पूज्य गुरुदेवश्री ने इन किताबों की दिल खोलकर प्रशंसा की। कालांतर में ये किताबें हिन्दी से, इंग्लिश, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल आदि भाषाओं में भी अनुवादित होकर लाखों की संख्या में देश–विदेश के आत्मार्थियों तक पहुँची। अल्पसंख्यक समाज के किसी धार्मिक साहित्य का इतनी बड़ी संख्या में प्रचार–प्रसार आश्चर्यजनक और दुर्लभ ही है।

तत्त्वज्ञान और तत्त्वप्रचार, समाज में विवादों का और अशांति का कारण न बने, इसके लिये आवश्यक था कि सक्षम विद्वान उसे सही स्वरूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत करें। इसके लिये पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने सोनगढ में ही प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

उन्होंने सभी विद्वानों के सामने तत्त्वप्रचार की रीति–नीति स्पष्ट की;

तत्त्व की बात को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रशिक्षण दिया।

देशभर के सभी प्रवचनकारों ने इसमें भाग लिया, और इसका लाभ यह हुआ कि गलतफहमी के कारण होने वाले विवाद खत्म हो गये।

यह पाया गया कि तत्त्वज्ञान के विरोध के पीछे एक दूसरे के प्रति अपरिचय के कारण पैदा होने वाली गलतफहमियों का भी बहुत बड़ा हाथ है।

इस कमी को दूर करने के लिये धर्मरत्न पण्डित बाबूभाई मेहता, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और श्री नेमिचंदजी पाटनी ने, एक नीति के तहत, समाज के सभी वर्गों के साथ प्रभावशाली संपर्क स्थापित किया, जिसके फलस्वरूप विरोध की तीव्रता कम हुई और तत्त्वप्रचार को बल मिला।

इतने बड़े विशाल देश में कुन्दकुन्द कहान के तत्त्वज्ञान के प्रभावशाली प्रचार के लिये बड़ी संख्या में, पूर्ण शिक्षित, न्याय–व्याकरण को जानने वाले, सभी अनुयोगों के ज्ञाता, नयों के ज्ञान में निपुण, पूर्ण समर्पित विद्वानों की आवश्यकता थी।

यह काम अत्यंत कठिन भी था, पर इसके महत्व को देखते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने १९७७ में जयपुर में महाविद्यालय की स्थापना की।

इस महाविद्यालय से आज तक ५७१से अधिक शास्त्री विद्वान तैयार होकर देश और विदेश में फैल गये हैं और आज देशभर में स्थापित हुये, पूज्य गुरुदेवश्री के सभी धामों का संचालन उन्हीं के सबल हाथों में है

आज भी इस महाविद्यालय से प्रतिवर्ष लगभग ३०–४० विद्वान पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके निकलते हैं

पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में और उनके बाद भी अनेकों वर्षों तक देशभर में सोनगढ के अलावा मात्र टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ही एक ऐसा धाम था, जिसने संपूर्ण मुमुक्षु समाज के सहयोग से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से तत्त्वप्रचार को गति प्रदान की।

कालान्तर में समय की मांग को देखते हुये अन्य केन्द्रों की आवश्यकता भी महसूस की जाने लगी और अब उन केन्द्रों के संचालन के लिये योग्य विद्वानों की फौज भी उपलब्ध थी।

सो विगत कुछ ही वर्षों में अनेकों केन्द्रों की स्थापना हुई; जो सभी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से कुन्दकुन्द कहान के इस तत्त्वज्ञान के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ने, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के जमीनी संचालन में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

वहीं दूसरी ओर सफल रीति–नीति की रचना और क्रियान्वयन से इस तत्त्वज्ञान को समाज में आधिकारिक तौर पर स्थापित किया।

मुझे यह कहते हुये गौरव की अनुभूति होती है कि अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन पर पूज्य गुरुदेवश्री की असीम अनुकम्पा थी और मुझे पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में मलाड (मुम्बई) में फैडरेशन के अधिवेशन के संचालन का सौभाग्य मिला है।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को युगों तक इस बात के लिये याद किया जायेगा कि सिद्धांतों से समझौता किये बिना, समाज में विद्यमान अनेकों परस्पर विपरीत धाराओं के बीच संपर्क और सामंजस्य स्थापित करके तत्त्वज्ञान और तत्त्वप्रेमियों के प्रति एक वात्सल्य का भाव पैदा कर दिया है। आज हर व्यक्ति आत्मा और परमात्मा के बारे में गहराई से अध्ययन करने को उत्सुक है।

दो और युगांतरकारी कार्य इस दौरान हुये ह्न एक तो मुम्बई में जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल की स्थापना और दूसरा डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का धर्म प्रचार हेतु विदेश प्रवास।

मुम्बई में आयोजित एक शिविर के दौरान डॉ. भारिल्ल का प्रवचन सुनकर एक भाई श्री दिनेश मोदी अत्यंत प्रभावित हुये और उन्होंने डॉ. भारिल्ल के समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि आपका सहयोग मिले तो मैं एक संस्था की स्थापना करके यह अद्भुत बात आपके माध्यम से बिना किसी पंथ के भेदभाव के समस्त जैन समाज तक पहुँचाना चाहता हूँ।

न करना तो डॉ. भारिल्ल ने कभी सीखा ही नहीं, कोई भी छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा व्यक्ति अगर उनके पास तत्त्वप्रचार का कोई भी प्रस्ताव लेकर आता है तो वे तुरंत सहयोग के लिये सहमत हो जाते हैं, वह

भी सामने वाले की सुविधा के अनुरूप।

यहाँ भी वे श्री दिनेश मोदी के साथ हो लिये, मुम्बई में जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल के अनेकों सर्कल्स की स्थापना हुई और डॉ. भारिल्ल प्रतिवर्ष श्वेताम्बर पर्यूषण में इस संस्था द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में प्रवचन हेतु आने लगे और तबसे आज तक २८–२९ वर्षों में यह क्रम कभी भंग नहीं हुआ।

वे अकेले ही नहीं आये, अपने साथ सभी तत्कालीन महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रवक्ताओं को भी इस संस्था से जोड़ा, ताकि सभी सर्कल्स में एक साथ रोज सुबह शाम व्याख्यानों का कार्यक्रम चल सके।

इसका लाभ यह हुआ कि यह वीतरागी तत्त्वज्ञान उन सभी जैन बन्धुओं तक भी आसानी से पहुँच गया, जिनके पास अन्यथा इसके पहुँचने की कोई संभावना ही नहीं थी।

इसीतरह एक अध्यात्मप्रेमी भाई श्री रमणीक भाई बदर ने डॉ. भारिल्ल के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि आप स्वीकृति दें तो मैं आपका यू.के. और यू.एस.ए. प्रवास का कार्यक्रम बनाना चाहता हूँ। डॉ. साहब की स्वीकृति मिलने पर उन्होंने यह कार्यक्रम बना डाला।

बस फिर क्या था, वह क्रम आज २८–२९ वर्षों से बदस्तूर जारी है।

कल तक जिस अमेरिका में किसी ने आत्मा का नाम भी नहीं सुना था; आज वहाँ अमेरिका के नगर–नगर में वीतरागी तत्त्वज्ञान की गहरी से गहरी चर्चा करने वाले और समझने वाले लोग मौजूद हैं।

आज अमेरिका में डॉ. भारिल्ल ''आत्मा'' के नाम से जाने जाते हैं, वे आते हैं तो लोग कहते हैं कि ''आत्मा'' आ गयी।

कुन्दकुन्द कहान की भगवान आत्मा की बात अमेरिका और अन्य देशों तक पहुँचाने का श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को दिया जा सकता है तो वह है डॉ. भारिल्ल। कई वर्षों तक वे अकेले ही जाते रहे, फिर अन्य लोग भी इस क्रम में शामिल हो गये, उनमें पण्डित श्री अभयकुमारजी, श्री दिनेशजी शहा, श्रीमती उज्ज्वला शहा एवं मैं स्वयं भी शामिल हूँ।

एक और मील का पत्थर – विभिन्न टी.वी. चैनलों पर प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के व्याख्यानों का प्रसारण।

आज १० से अधिक वर्षों से लगातार प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान टेलिविजन पर आते हैं, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस शक्तिशाली माध्यम से कुन्दकुन्द कहान की यह भगवान आत्मा की बात किन–किन लोगों तक पहुँचती है, उन लोगों तक जिनके कानों में यह बात पहुँचना अन्यथा कभी संभव ही नहीं था।

एक और महत्वपूर्ण बात तो रह ही गई – विश्वविद्यालयों के स्तर पर इस तत्त्वज्ञान का पठन–पाठन।

डॉ. भारिल्ल और उनके शिष्य वर्ग ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, आज डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित अनेकों किताबें अनेकों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल है और वे नियमित तौर पर विश्वविद्यालयों में आयोजित सेमिनारों में अपने निबन्ध प्रस्तुत करते रहते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द के पाँच परमागमों में से तीन पर अब तक डॉ. भारिल्ल द्वारा हजारों पृष्ठों में समाहित अनुशीलन प्रकाशित हो चुके हैं।

उन कुन्दकुन्द के वे गम्भीर व क्लिष्ट ग्रन्थ जिन पर व्याख्यान करने से बड़े–बड़े विद्वान भी बचते हैं और इस डर से कलम नहीं चलाना चाहते कि कहीं कोई गलती न हो जाये, डॉ. भारिल्ल ने निर्भीक होकर जनसामान्य की आधुनिक भाषा में उन ग्रन्थों की ऐसी विस्तृत व स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है, जिसे आज तक कोई भी चुनौती नहीं दे सका।

इन सभी कामों में जो दो बातें कॉमन है। एक तो डॉ. भारिल्ल और दूसरी निरन्तरता। यदि तीसरी बात इसमें शामिल की जाये तो वह है user friendliness (उपभोक्ता के अनुकूल) बिना किसी शर्त के सभी के साथ सहयोगी व्यवहार।

उक्त सभी बातों ने विगत ३० वर्षों में कुन्दकुन्द कहान के इस दुर्लभ तत्त्वज्ञान को सारे विश्व में सभी वर्गों, जाति और धर्मों के लोगों के बीच पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है डॉ. भारिल्ल ने।

यह तो चर्चा थी विगत ३० वर्षों की और आगामी ३० वर्षों के लिये हमारा लक्ष्य है – धुंआधार तत्त्वप्रचार।

सभी वर्जनाओं से रहित, भेदभाव से निरपेक्ष, किसी बाड़े में बंधकर नहीं, सभी बाड़ों को तोड़कर; क्योंकि यदि हम बाड़ों में ही कैद रहेंगे तो तत्त्व का प्रचार कैसे होगा, नये लोगों तक तत्त्व कैसे पहुंचेगा, तत्त्वरसिकों की संख्या कैसे बढेगी ?

हाँ एक बात निश्चित है कि प्रचार के लिये सिद्धांत से समझौता नहीं किया जा सकता; हम अपनी बात अपने ही तरीके से जन–जन तक पहुंचायेंगे, हम तत्त्वप्रचार के लिये सभी उपलब्ध साधनों का उपयोग करेंगे, हम अपनी बात कहेंगे, पर किसी से उलझेंगे नहीं; अपनी शक्ति का अपव्यय, आरोप–प्रत्यारोप में नहीं करेंगे। हम न तो किसी पर कोई आरोप लगायेंगे और न किसी आरोप का जवाब देंगे; हमारा प्रयास होगा कि यदि हमारे मुख से एक वचन भी निकले तो उसमें मात्र आत्महित की ही बात हो।

रही बात चुनौतियों की; सो चुनौतियाँ बहुत हैं, अन्दर से भी और बाहर से भी। बाहरी चुनौति तो स्वाभाविक ही है; ऐसी अद्भुत बात आज तक किसी ने सुनी ही कहाँ है, पहली बार सुनेगा तो चौंकेगा तो सही, हर नये विचार का विरोध तो होता ही है सो होगा ही, हम उसके लिये तैयार हैं।

रही बात अंतरंग चुनौतियों की, सो यह एक बड़ी विडम्बना है।

हम सब एक भगवान के भक्त, एक गुरु के चेले, किसी बात में एकमत क्यों नहीं हो पाते हैं ? एक व्यक्ति मशाल लेकर खड़ा होता है और चार लोग विरोध में खड़े हो जाते हैं।

पर यह सब तो चलता रहेगा; हम किसी से द्वेष नहीं रखेंगे और द्वेषमूलक किसी विरोध पर न तो ध्यान ही देंगे और न उसका जवाब।

इससे तो आदिनाथ नहीं बच सके, मरीचि उनके सामने खड़ा हो ही गया था न।

आज हमारे साथ हजारो समर्थ विद्वानों की फौज है, सभी विद्यमान साधन हमारे पास उपलब्ध हैं और सबसे उत्तम वीतरागी संतों की वाणी का मर्म हमारे पास है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि कुन्दकुन्द कहान का यह महान तत्त्वज्ञान अमर है, अमर रहेगा। ●